

## 'पन्त' खुले हैं प्रेम से, उन्नति के सोपान

ISSN: 2583-8849

साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त 2023 वर्ष 1 अंक 4

जीवनदाता प्रकृति से, करें नहीं खिलवाड़ ।  
सारे स्वारथ सिद्ध हों , सदा उसी की आड़ ॥-1

नदियां बहती थी यहां , लेकर शीतल नीर ।  
कलुषित हम ने कर दिया, समझ सके कब पीर ॥-2

कूड़ा करकट गंदगी, फेंकी नदिया तीर ।  
जल को दूषित कर चले, फोड़ रहे तकदीर ॥-3

धूल धुएँ से भर रही, शहरों की अब वायु ।  
जीना तो मुश्किल हुआ, अल्प हो रही आयु ॥-4

खनन करें पर्वत जमीं, दोहन करते नीर ।  
तभी प्रकृति से मिल रही, भूकम्पों की पीर ॥-5

जंगल काटे शहर हित, बिके खेत खलिहान ।  
प्रकृति संपदा लूट कर, मानव के मुस्कान ॥-6

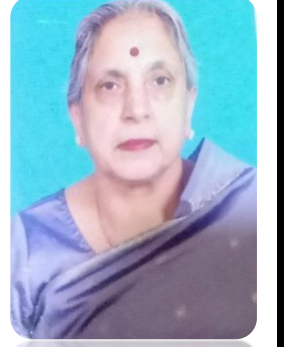
प्लास्टिक के उपयोग से, होता है नुकसान ।  
पशु पक्षी या मनुज की, मुश्किल होगी जान ॥-7

जन जन में आक्रोश है, समझ न आई भूल ।  
रौंदा है जब प्रकृति को, झेल रहे अब शूल ॥-8

स्वच्छ धरा हम दे सकें, सुखी रहे संतान ।  
वृक्षारोपण कीजिए, फैले हरित वितान ॥-9

धरा, गगन, जल, वायु ही, जीवन के आधार ।  
'पन्त' इन्ही के कोप से, कांप जाय संसार ॥-10

इक दूजे के संग ही, जीना है आसान ।  
'पन्त' खुले हैं प्रेम से, उन्नति के सोपान ॥-11



नाम - ज्योतिर्मयी पन्त

जन्मतिथि-17/04/1945

जन्म स्थान -नैनीताल,उत्तराखण्ड

शिक्षा - एम.ए., एम.फिल. संस्कृत

प्रकाशित कृतियाँ :- 'ओ माँ' नामक

एक संग्रह प्रकाशित ।

कई पत्र-पत्रिकाओं, ई-पत्रिकाओं में कहानियाँ, कवितायें व  
लेख प्रकाशित. (हिन्दी और कुमाँउनी )

कविता ,हाइकु,तांका,वर्ण पिरामिड ,दोहा ,गीतिका,मुक्तक  
संकलनों में सहभागिता ।

हिंदी के प्रथम सामूहिक उपन्यास 'खट्टे मीठे रिश्ते' में  
सहभागी .

2010\_ 2011 में उद्भव मानव सेवा सम्मान प्राप्त.

शोभना काव्य सृजन सम्मान 2012